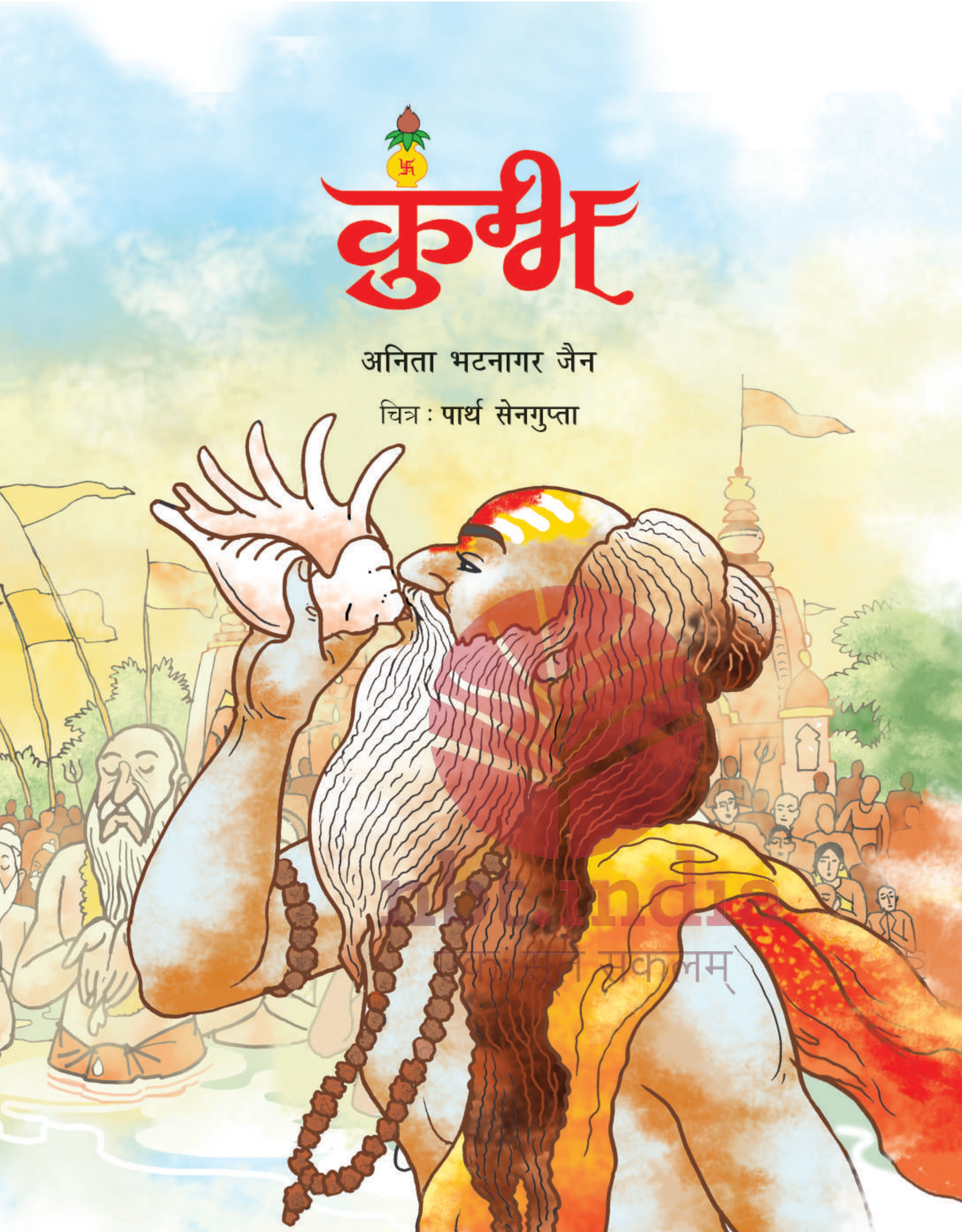
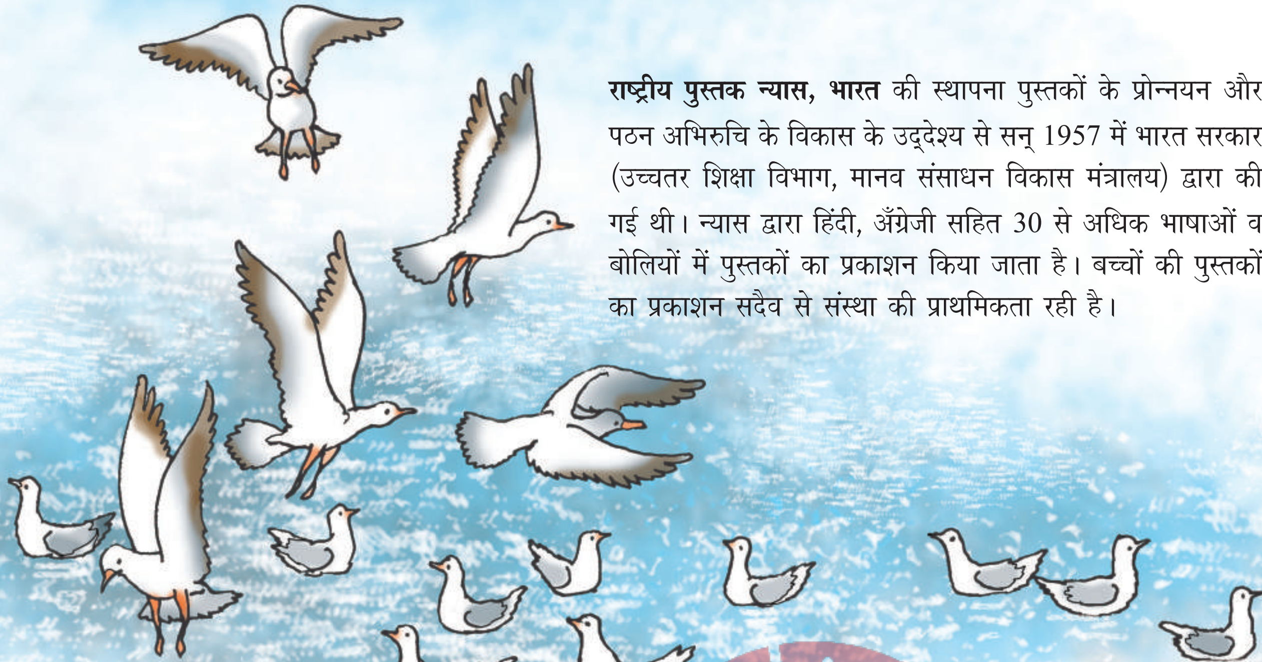
कुंभ

अनिता भटनागर जैन

चित्र : पार्थ सेनगुप्ता



8 से 10 वर्ष के बच्चों के लिए



राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से सन् 1957 में भारत सरकार (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा की गई थी। न्यास द्वारा हिंदी, अँग्रेजी सहित 30 से अधिक भाषाओं व बोलियों में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। बच्चों की पुस्तकों का प्रकाशन सदैव से संस्था की प्राथमिकता रही है।

ISBN 978-81-237-9133-3

पहला ईप्रिंट संस्करण : 2020

Kumbh *(Hindi Original)*

₹ 40.00

ईप्रिंट द्वारा ऑर्नेट टेक्नो सर्विसेज प्रा.लि

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित

www.nbtindia.gov.in

nbt.india
एकः सूते सकलम्

नेहरू बाल पुस्तकालय

कुम्भ

अनिता भटनागर जैन

चित्र : **पार्थ सेनगुप्ता**



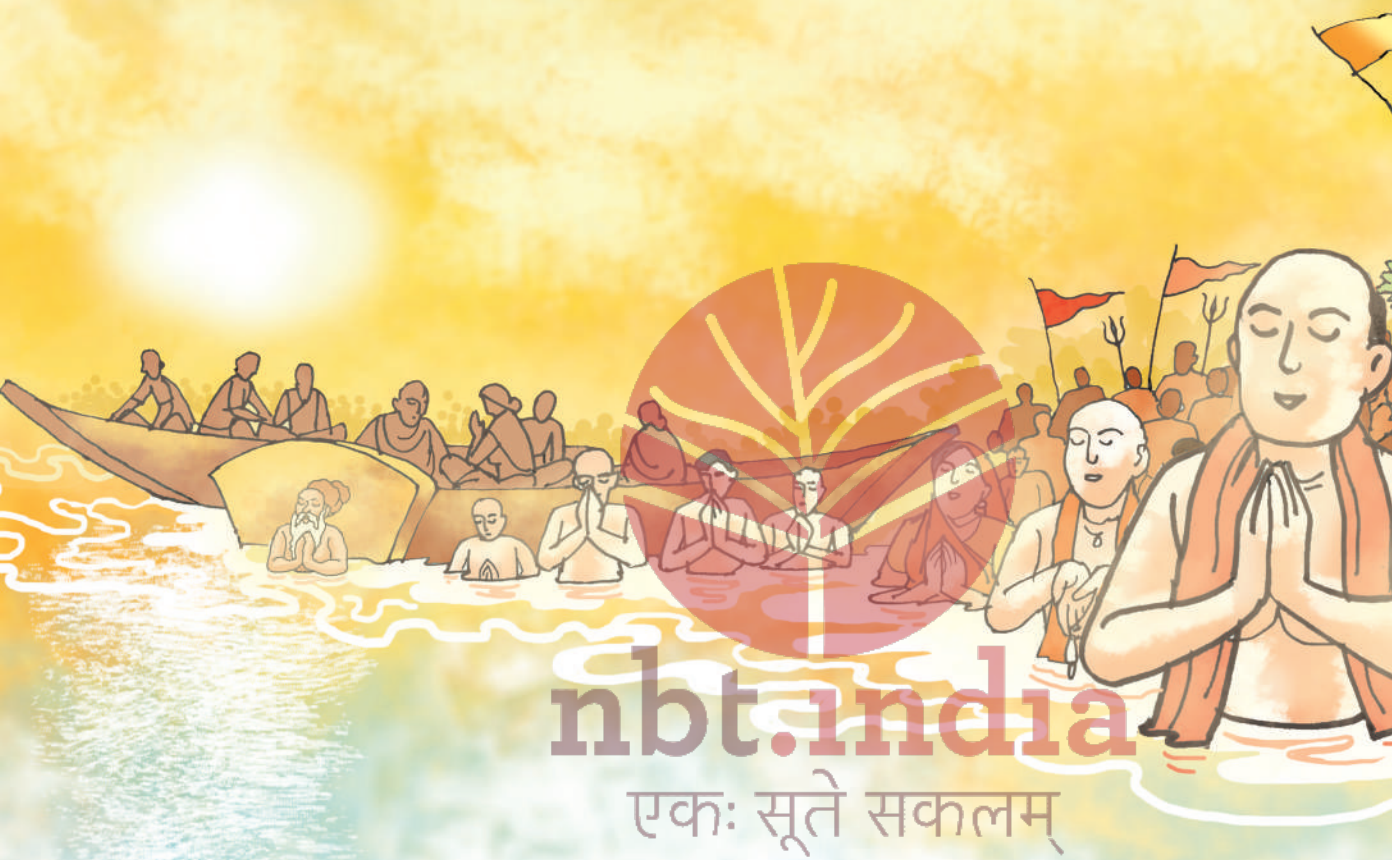
nbt.india
एकः सूते सकलम्

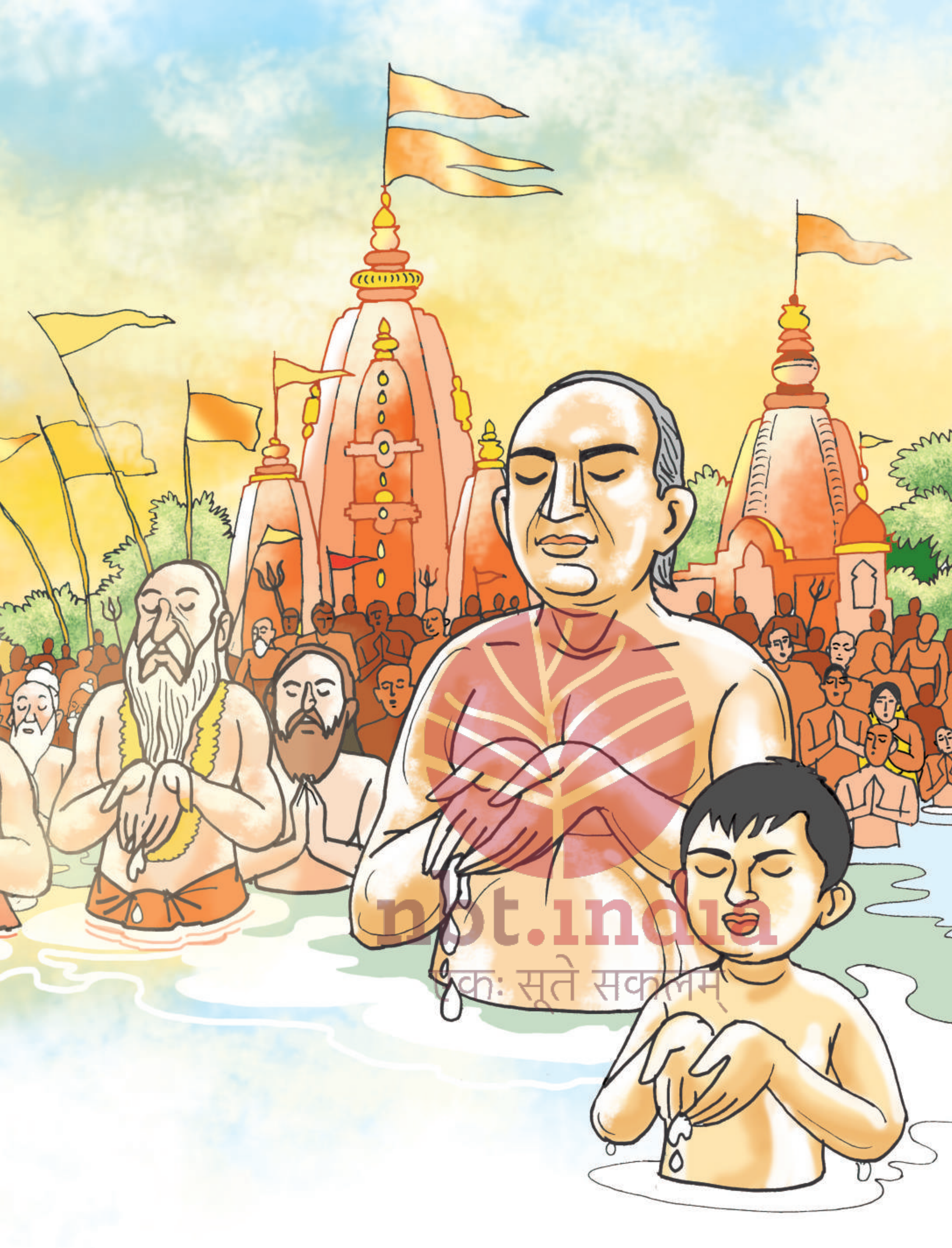
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

“जय गंगा मैया”

“अरे मर गया! कितना ठंडा पानी है?”

सूरज अपने नानाजी के साथ कंधों तक ऊँचे पानी में खड़े होकर अंजुली में जल भर उगते हुए सूर्य को प्रणाम कर रहा था। उसकी नानी, संगम के इस स्थल पर जहाँ गंगा, यमुना व अदृश्य सरस्वती नदियाँ मिलती हैं, नाव पर बैठी थीं। नानी की उंगलियाँ माला पर जाप कर रही थीं और चेहरे पर भीनी-सी संतोष भरी मुस्कराहट थी। प्रयागराज में कुम्भ के दौरान आने की उनकी वर्षों की इच्छा जो पूरी हो गई थी।





चाँदनी ने नाना की बाँह खींचते हुए पूछा, ‘‘नाना! कुम्भ मेला कितने सालों से मनाया जाता है?’’

‘‘यह माना जाता है कि यह मेला 2000 वर्ष पुराना है। ऋग्वेद में भी इसका वर्णन है,’’ नाना बोले।

‘‘मैंने इंटरनेट पर पढ़ा था। सम्राट हर्षवर्धन के राज्य में चीनी यात्री व्हेनसाँग (Xuanzong) ने भी अपने वृत्तांत में इसके बारे में लिखा है,’’ सूरज ने गर्व से कहा।

नदी पर असंख्य छोटी नावें थीं। उन पर लगे केसरिया झंडे हवा में लहरा उठे थे। बहुत-से श्रद्धालु नाव पर बैठकर ही पूजा कर रहे थे। लहरों पर बैठे हिल रहे पक्षियों के समूह, धैर्य से भोजन मिलने की प्रतीक्षा कर रहे थे। पक्षियों के अन्य समूह आसमान में चक्कर लगा रहे थे, मानो कि वे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड द्वारा प्रमाणित विश्व के सबसे बड़े धार्मिक सम्मेलन में भाग लेने आए हों। किसी की बाँसुरी की मधुर धुन और सूर्य

की स्वर्णिम किरणों में चमकता हुआ दृश्य इतना सुंदर था कि वह काल्पनिक लग रहा था।

तट पर वापस पहुँचने पर बच्चे नाश्ता करने को उत्सुक थे। उनके भागते हुए कदम नानी की आवाज़ से रुक गए। ''बच्चों यहाँ बड़ों का हाथ पकड़ कर चलो, यहाँ भीड़ में खोना बहुत आसान है।''

अनेक रंग-बिरंगे स्टाल में खाने के नाना प्रकार के व्यंजन मिल रहे थे। नाना सबको ''बनारसी कचौड़ी भंडार'' ले गए। सब लकड़ी की बेंचों पर बैठे। पत्तल में गरमागरम दाल की कचौड़ी व जलेबी और कुल्हड़ों में मलाईदार दूध दिया गया।

दुकान के मालिक वृद्ध थे, परंतु उनकी कमर बिल्कुल सीधी थी। सिर पर लाल पारम्परिक पगड़ी और घुमावदार मूँछों में वे राजसी लग रहे थे। हँसते हुए उन्होंने बच्चों से पूछा, ''तो तुम अपने सब पाप धो आए?''

‘‘जी हाँ।’’ सूरज ने उत्तर दिया। ‘‘कुम्भ में पवित्र नदी में डुबकी लगाने से सभी पाप धुल जाते हैं। मैंने प्रण किया है कि प्रयास करूँगा कि भविष्य में कोई गलत कार्य न करूँ।’’ अपनी जीभ से मलाई से बनी मूँछ को चाटते हुए चाँदनी के पूछा, ‘‘नानी, मेरी टीचर की माताजी मध्य प्रदेश में रहती हैं और उन्होंने वहाँ कुम्भ में भाग लिया था। क्या कुम्भ वहाँ भी मनाया जाता है?’’

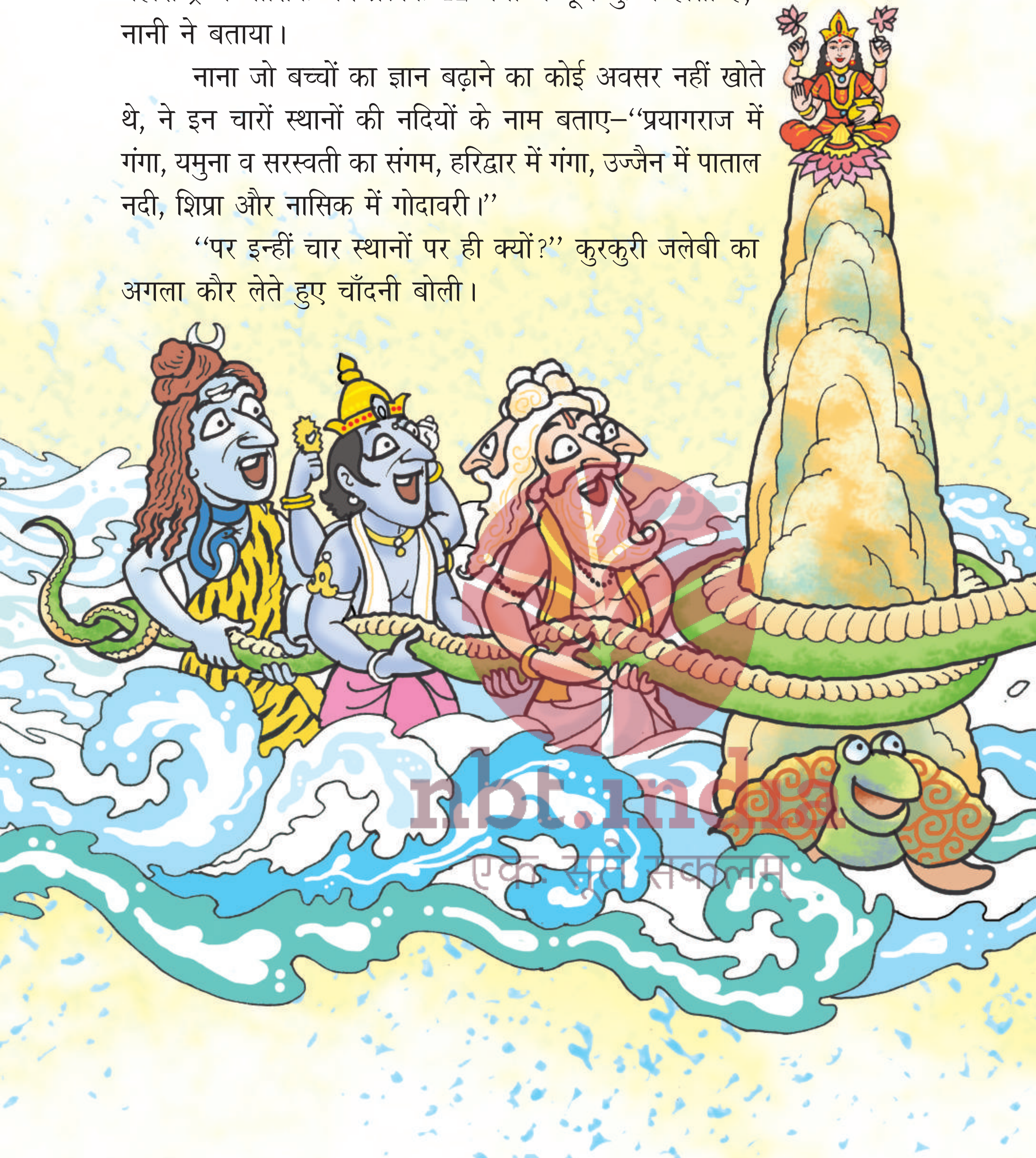




"हाँ, कुम्भ मेला हर तीन साल बाद बारी-बारी से चार स्थानों पर मनाया जाता है..उत्तर प्रदेश में प्रयागराज, उत्तराखंड में हरिद्वार, मध्य प्रदेश में उज्जैन व महाराष्ट्र में नासिक में। प्रत्येक 12 वर्षों में पूर्ण कुम्भ होता है," नानी ने बताया।

नाना जो बच्चों का ज्ञान बढ़ाने का कोई अवसर नहीं खोते थे, ने इन चारों स्थानों की नदियों के नाम बताए–"प्रयागराज में गंगा, यमुना व सरस्वती का संगम, हरिद्वार में गंगा, उज्जैन में पाताल नदी, शिप्रा और नासिक में गोदावरी।"

"पर इन्हीं चार स्थानों पर ही क्यों?" कुरकुरी जलेबी का अगला कौर लेते हुए चाँदनी बोली।



नाना से पहले दुकानदार ने नाटकीय अंदाज़ में उत्तर दिया, ''सबसे लोकप्रिय पौराणिक कहानी है कि देवता और राक्षसों के बीच युद्ध में देवता हार गए। तब वर्षा के देवता इंद्र, ब्रह्माजी के पास गए जो उन्हें लेकर मदद के लिए भगवान विष्णु के पास पहुँचे। विष्णुजी ने 'समुद्र मंथन' का सुझाव दिया। मंद्राचल पर्वत को मथनी बनाया गया और वासुकी, सर्प देवता को रस्सी। मंथन से अमृत का



कुम्भ या कलश भी बाहर आया। अमृत जिससे व्यक्ति अमर हो जाता है, उस कलश को पाने के लिए हुई लड़ाई में अमृत की कुछ बूँदें चार स्थानों पर गिरीं। बच्चों इन्हीं चार स्थानों पर कुम्भ मनाया जाता है।''

अब बच्चे अपने टेंट वापस पहुँचने के लिए उत्सुक थे। जहाँ तक नज़र जाती टेंटों की पंक्तियाँ दिख रही थीं। इन टेंटों में 20,000 से अधिक बिस्तर लगाए गए थे। तम्बुओं के हवाई दृश्य के पोस्टर को देख सूरज बोला, ''यह तो प्राचीन समय का चित्र लग रहा है। तम्बुओं का शहर।''

एक विशाल रंग-बिरंगे पंडाल में प्रवचन चल रहा था। हज़ारों लोग दरियों पर बैठे हुए ध्यान से सुन रहे थे। माइक्रोफोन पर आवाज़ गूँजी, ''कुम्भ मेले के आयोजन का स्थल सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति ग्रहों की विभिन्न राशियों के स्थानों से तय होता है। इन नक्षत्रों से एक अद्‌भुत लौकिक घटना होती

है, जिसमें कुम्भ में नदी में स्नान करने से व्यक्ति जन्म और मृत्यु के चक्र से छुटकारा पा जाता है और मोक्ष प्राप्त कर लेता है।'' विशाल भीड़ ने उत्साह में तालियाँ बजाईं।

नींद लेने के बाद बच्चे फिर उत्साहपूर्वक अपनी मेघा मौसी, जो कि मेला अधिकारी के दफ्तर में काम करती थीं, के साथ जाने के लिए तैयार थे। मौसी, मेला शहर जो कि विश्व का सबसे बड़ा बनाया हुआ अस्थायी शहर था, की विभिन्न व्यवस्था की इंचार्ज थीं।

मेघा ने कहा, ''आओ बच्चों। चल कर देखते हैं मेले में क्या-क्या हो रहा है।'' बच्चे प्रसन्न थे कि नानी के ज़ोर देने पर उन्होंने स्वेटर पहन लिए थे क्योंकि धूप के बावजूद हवा बहुत ठंडी थी। मेघा के साथ आए गार्ड ने चाँदनी को उठाकर कंधों पर बैठा लिया, ''अब आप सबसे लम्बी हो गईं और दूर तक देख सकती हैं।'' चाँदनी खुश होकर हँसने लगी।

नागा बाबाओं के जुलूस को रास्ता देने के लिए सब लोग मार्ग के किनारे खड़े हो गए थे। कम और ज्यादा उम्र के सभी बाबा निर्वस्त्र थे। माथों पर लम्बे तिलक, गले और कमर में गेंदे की मालाएँ, शरीर पर भस्म मली हुई, वे सब एक-दूसरे को छेड़ रहे थे। सभी बालकों की तरह प्रसन्नचित्त लग रहे थे कि वर्षों से प्रतीक्षित कुम्भ स्नान करने जा रहे थे।



सूरज से रहा न गया बोला, “मौसी! क्या इन्हें सर्दी नहीं लगती?”

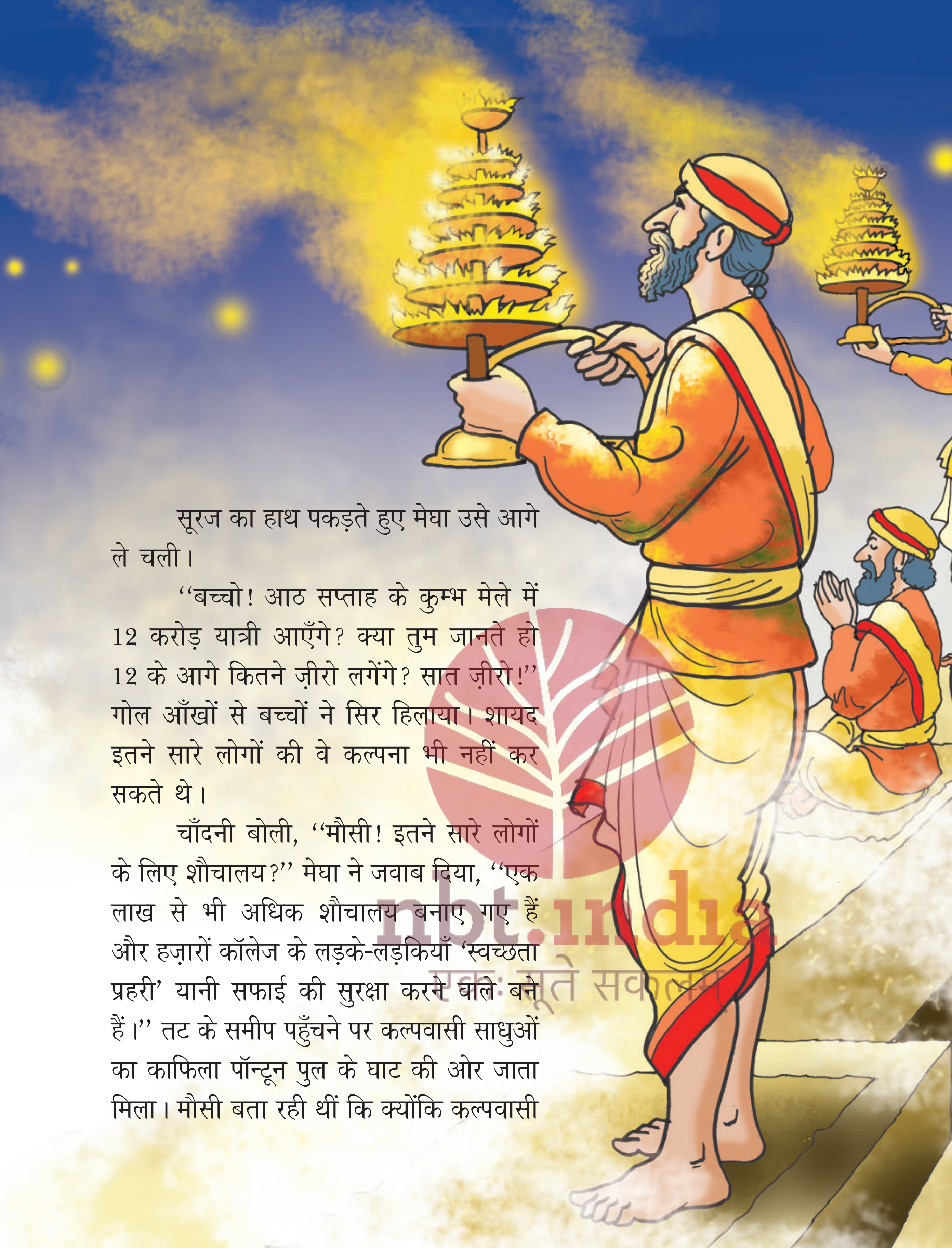
“हाँ, लगती है परंतु यह दृढ़ इच्छाशक्ति से उसे स्वीकार कर लेते हैं। मनुष्य का मन इतना शक्तिशाली होता है कि वह असंभव को भी संभव बना देता है, यदि वह वास्तव में चाहे तो।”





थोड़ा आगे हठ योगियों का अखाड़ा था, ये अपने शरीर से कठोर तपस्या करते हैं। चाँदनी ने अचम्भित होकर देखा, रस्सियों जैसी लम्बी जटाओं के साधु केवल एक पैर पर खड़े थे। उन्होंने दूसरे पैर को मोड़ कर कपड़े की बेल्ट से शरीर से बाँध रखा था। एक अन्य साधु ने एक बाँह उठा रखी थी। उपयोग न करने के कारण वह बाँह बेहद पतली हो गई थी।





सूरज का हाथ पकड़ते हुए मेघा उसे आगे ले चली।

"बच्चो! आठ सप्ताह के कुम्भ मेले में 12 करोड़ यात्री आएँगे? क्या तुम जानते हो 12 के आगे कितने ज़ीरो लगेंगे? सात ज़ीरो!" गोल आँखों से बच्चों ने सिर हिलाया। शायद इतने सारे लोगों की वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

चाँदनी बोली, "मौसी! इतने सारे लोगों के लिए शौचालय?" मेघा ने जवाब दिया, "एक लाख से भी अधिक शौचालय बनाए गए हैं और हज़ारों कॉलेज के लड़के-लड़कियाँ 'स्वच्छता प्रहरी' यानी सफाई की सुरक्षा करने वाले बने हैं।" तट के समीप पहुँचने पर कल्पवासी साधुओं का काफिला पॉन्टून पुल के घाट की ओर जाता मिला। मौसी बता रही थीं कि क्योंकि कल्पवासी



रोज़ तीन बार नहाते हैं, इसलिए उनके रहने की जगह नदी के पास रखी गई है।

हवा में हिलते पॉन्टून पुल या पीपे के पुल जो केवल मेले के लिए बनाया गया था, पर चलने में बच्चों को मज़ा आ रहा था।

सूरज ढल गया था और अँधेरा बढ़ रहा था। अचानक मेला शहर की बत्तियाँ जल गईं। ‘‘अरे मौसी यह तो परियों के देश जैसा जगमगाने लगा है,’’ हँसते हुए चाँदनी बोली। सामने के घाट पर पंक्ति में खड़े पंडितों ने गंगा आरती शुरू की। सात स्तर के दीप दान लहरा रहे थे, घंटियाँ बज रही थीं। सबने भक्ति से सिर झुका कर, हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

बच्चे बड़े हनुमान मंदिर, जिसे हाई कोर्ट के पास स्थित होने के कारण ‘‘जस्टिस हनुमानजी’’ भी कहा जाता है, में दर्शन कर यमुना नदी के किनारे पर पहुँचे, जहाँ प्रयागराज

का किला था। गार्ड ने बताया, ''यह किला 1583 में बादशाह अकबर ने बनवाया था। इसके अंदर जोधा महल में सरस्वती कूप यानी कुआँ है, जो सरस्वती नदी का उद्‌गम यानी प्रारम्भ होने का स्थान माना जाता है।''

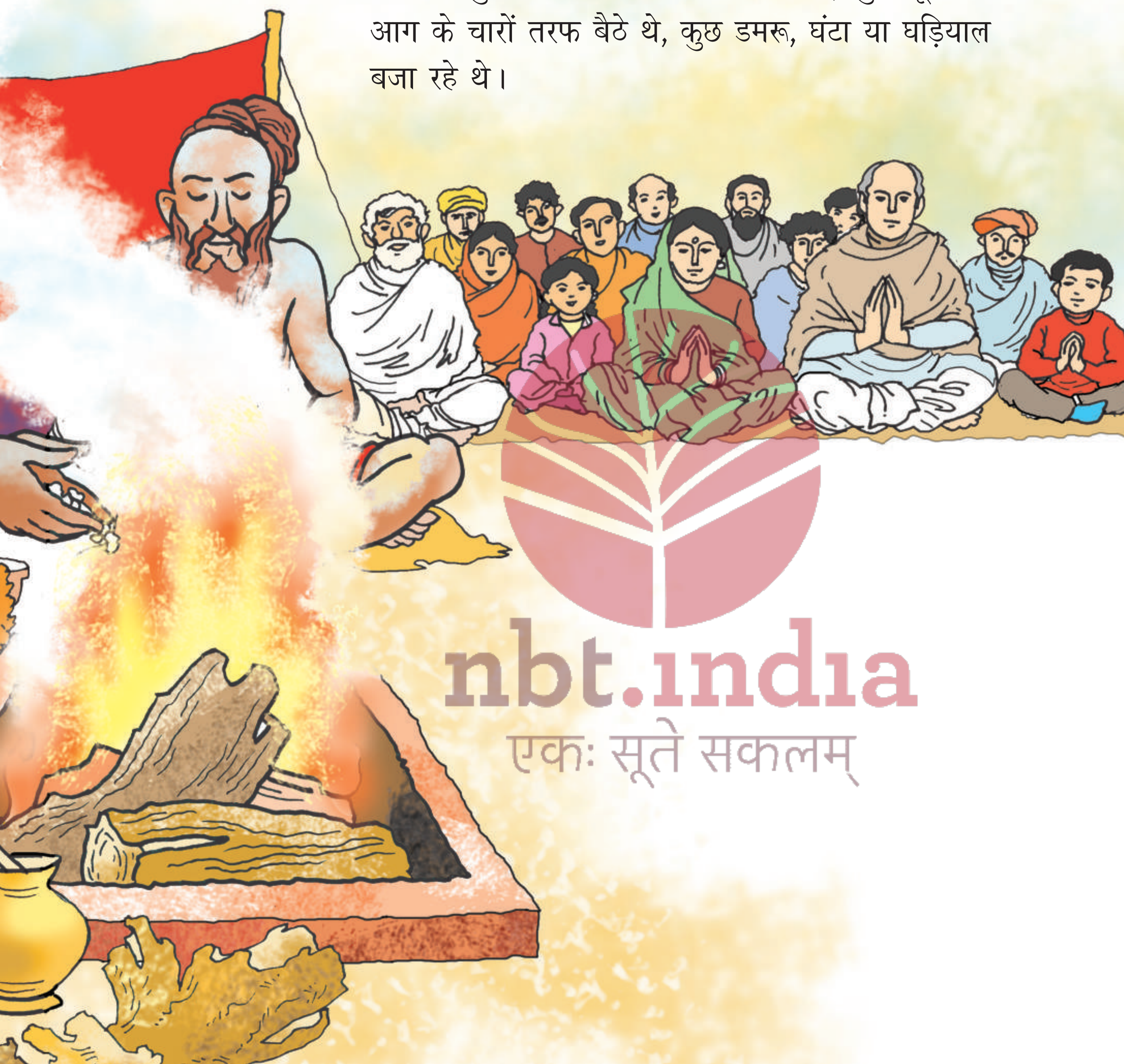
तट पर बहुत बड़ी भीड़ एकत्र हो गई। अचानक बत्तियाँ बंद हो गईं और पूर्ण अंधकार हो गया, फिर किले की दीवार पर शुरू हुआ मंत्रमुग्ध करने वाला लेज़र और साउंड शो।

अगले दिन मकर संक्रांति थी, यानी वह दिन जब से दिन फिर से बड़े होने शुरू होते हैं। नानी की इच्छा थी कि वह इस पवित्र दिन जब खिचड़ी का भी दान किया जाता है, वे नदी में स्नान करें। बगल के टेंट में दक्षिण भारत से आए आयंगरजी नाना को कुम्भ मेले के प्रथम दिन 'शाही स्नान' और 'मौनी अमावस्या' पर होने वाली सबसे अधिक भीड़ के बारे में बता रहे थे।



अगली सुबह सब घाट पहुँचे। नदी में तैरती रंग-बिरंगी प्लास्टिक की रस्सियों के पीछे ही नहाना था, क्योंकि उनके आगे पानी गहरा था। सबने नदी में खड़े होकर सूर्य भगवान, जिनसे ही जीवन संभव है, को जल अर्पित किया और पूजा की।

घाट पर थोड़ा आगे बड़े से मंडप में बहुत सारे साधु बैठे थे। कुछ मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे, कुछ धूनी या आग के चारों तरफ बैठे थे, कुछ डमरू, घंटा या घड़ियाल बजा रहे थे।



एक हिस्से में ज़मीन पर पँक्तियों में बैठ लोग एक साथ भोजन कर रहे थे, बिना जाति या अमीर-गरीब के भेदभाव के।



नाना ने बच्चों को समझाया, ''देखो, पूरे देश से भी लोग कुम्भ मेले में आते हैं। सब आपस में विचार-विमर्श, बातचीत करते हैं। एक-दूसरे की बात समझने से ही समाज में एकता रहती है। दूसरे से सहमत न हो फिर भी उसकी बात सुनना महत्त्वपूर्ण है। मेले में अलग-अलग भाषाओं और संस्कृति के लोगों के आने से राष्ट्रीय एकता भी मजबूत होती है। बिना एकता के हम प्रगति नहीं कर सकते।''

जीप में बैठने से पहले बच्चों को मेघा मौसी ने प्यार से लिपटा लिया। उन्होंने सूरज और चाँदनी को कुम्भ के लोगो यानी प्रतीक चिह्न की जैकेट दी। लोगो में एक सुंदर-सा मंदिर, साधु, नदी, शुभ कलश बना था और 'सर्व सिद्धि भवः' लिखा था।





मौसी ने बताया, यह माना जाता है कि ब्रह्मांड का आकार कुम्भ यानी कलश जैसा है। इसके अंदर 84 लाख प्रजातियाँ हैं, जिसमें देव, देवी, नदी, मनुष्य, पशु-पक्षी, वृक्ष आदि हैं। यह भी माना जाता है कि विष्णु, महेश व ब्रह्माजी की त्रिमूर्ति क्रमशः कलश के मुख, गले या तंग भाग और तली में और देवियाँ मध्य भाग में हैं।''

जीप मेला शहर को पीछे छोड़ रेलवे स्टेशन की तरफ जा रही थी। नानी मुस्कराई और बोली, ''कुम्भ का संदेश 'सर्व सिद्धि भवः है यानी सब कुछ संभव है। बच्चो, बड़े सपने देखने, ऊँचे लक्ष्य बनाने, धैर्य के साथ परिश्रम करने से तुम असंभव को भी हासिल कर लोगे।''

